IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कला षिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

निर्देशिका

डॉ. एकता पारीक

प्राचार्या

प्रस्तुतकर्त्री

बीनू कुमारी यादव

एम.एड.छात्रा

सारांश –

कोठारी कमीशन ने कहा है कि भारत का भविष्य अपनी कलाओं मे रूपायित हो रहा है। इस दिषा में कला शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। युवा पीढी को मानवीय मुल्यों की शिक्षा देने हेतु कला शिक्षा के महत्व को हमारे दार्शनिकों, शिक्षाशात्रियों ओर समाज सुधारको ने एकमत से स्वीकार किया है।

कला–शिक्षा के कई उद्देश्य रहे है जैसे चित्रकला के माध्यम से नैतिक शिक्षा देना अवकाश का समय का सदुपयोग करना ओर उससे सांस्कृतिक उन्नत्ति करना। कला–शिक्षा के लिए मूल्य संसाधन है। छात्र उनका सांस्कृतिक व प्राकृतिक पर्यावरण बच्चे की अभिव्यक्ति का निकटतम तथा प्रियतम माध्यक उसकी मातृभाषा है।

सौंदर्य बोध स्वरूप जीवन के लिये आवष्यक है। सत्यम शिवम् सुन्दरम् आत्मा के प्रेरक गुण है।

एक शिक्षाविद् ने कहा है कि सौदर्य बोध की क्षति से न केवल भावात्मक कल्याण तथा आनन्द का एक महान स्त्रोत कट जाता है। बल्कि उससे मानसिक और चारीरिक स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचती है।

प्रस्तावना –

आधुनिक से पूर्व या पीछे तक जाये तो आदि मानव के लिए कला एक उल्लासात्मक अभिव्यक्ति का मार्ग था। आज वर्तमान में भी यही अभिव्यक्ति मानव अपनी नवीन कृतियों में परिलक्षित कर रहा है। बालक की षिक्षा व्यवस्था में इस अभिव्यक्ति को नियमित विकास एवं अवसर प्रदान के लिए कला–षिक्षा विद्यालय स्तर पर अनिवार्य शिक्षा का विषय बन गया है।

कला अध्ययन के रूप में चित्रकला की कक्षा हो ये आवश्यक है तथा बच्चों में रंगों रेखाओं और संयोजन के प्रति संवेदना जगे ऐसा वातावरण मिले यह भी अनिवार्य है।

राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 के अन्तर्गत कला शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा जुलाई 1987 से कक्षा 9वीं में तथा सैकण्डरी परीक्षा 1989 से प्रारम्भ किया है। कला शिक्षार्थी का सहज अभिव्यक्ति कौशल है अतः इसमें नाट्यकला संगीतकला तथा चित्रकला का समन्वित पाठ्यक्रम पुस्तक में बोर्ड ने सैद्धान्तिक परीक्षाओं का आयोजन भी इस विषय में किया है कला–शिक्षा विषय सैकण्डरी स्तर पर अनिवार्य रूप से सम्मानित हो इस हेतु प्रति सप्ताह प्रति कक्षा हेतु दो कालांष निर्धारित किये गये है। विषय का सत्र् पर्यन्त सम्पादित क्रिया–कलापों के आधार पर मूल्यांकन होगा।

समस्या का औचित्य –

मानव जीवन में कला शिक्षा का बहुत महत्व है। कलात्मक जीवन ही वास्तविक जीवन है। शिक्षा प्राप्त करना ही मानव जीवन की सफलता व सुखमय स्थिती के लिए आवष्यक है। कला की सहायता से किसी भी विषय को सरल बनाया जा सकता है।

विष्व की प्राचीन सभ्यताओं में चित्रलिपि के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती थी सुमेरिया की सभ्यताओं की क्युनीकार्य लिपी का आधार चित्रशैली ही थी, आज कहानी या कविता आदि के विभिन्न भावो या दृष्यो को चित्र के माध्यम से ह्रदयगम किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार के चित्रो द्वारा गणित की शिक्षा दी जा सकती है ओर इसके साथ ही साथ यह अन्य विषयों के साथ ही साथ अच्छा सम्बन्ध रखती है। विज्ञापन द्वारा समाज के हित की बातें का ज्ञान जनसाधारण को कराया जा सकता है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

1. गैर–सरकारी विद्यालय :–

गैर–सरकारी विद्यालयों की भारतीय षिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका रही है निजी विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जो किसी व्यक्ति, ट्रस्ट, रजिस्टर्ड सोसायटी या वर्ग द्वारा संचालित किये जा रहे है। कुछ निजी विद्यालय जो आर्थिक रूप से अत्यन्त सम्मपन्न उद्योगपतियों द्वारा संचालित तथा नियंत्रित होते है।

2. सरकारी विद्यालय :–

जिन विद्यालयों का संचालन पोषण नियंत्रण केन्द्र सरकार या राज्य सरकार करती है ऐसे विद्यालय सरकारी विद्यालय होते है। राजकीय विद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की मुख्य धारा के विद्यालय है इसमें राज्य तथा केन्द्र द्वारा संचालित सभी स्कूल आ जाते है लेकिन संविधान के अनुसार शिक्षा राज्य का विषय होने से इनका संचालन मुख्यतः राज्य सरकार ही करती है।

शोध के उद्देश्य –

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों मे कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व चहरी क्षेत्र के विद्याथियों में कला शिक्षा विषयके प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कला शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्रओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर के गैर– सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों का कला शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों की छात्राओं का कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. माध्यमिक स्तर के च्हरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों के छात्रों का कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
10. माध्यमिक स्तर के च्हरी व ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों की छात्राओं का कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
11. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों का कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
12. माध्यमिक स्तर के विषय व ग्रामीण क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
13. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की कला शिक्षा विषयके प्रति च्ैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
14. माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कला शिक्षा विषय के प्रति च्ैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

,शोध के परिकल्पना –

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नही होता है।
2. माध्यमिक स्तर के च्हरी क्षेत्र के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों मे कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. माध्यमिक स्तर के षहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा कला विषय के प्रति सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।
4. माध्यमिक स्तर के च्हरी क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्र छात्राओं की कला शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही होता है ।
5. माध्यमिक स्तर के च्हरी क्षेत्र के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही होता है।
6. माध्यमिक स्तर के च्हरी क्षेत्र के सरकारी गैर–सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
7. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कला

शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

8. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
9. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
10. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
11. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
12. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा चहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
13. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
14. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों के छात्रों में कला शिक्षा विषय के प्रति सार्थक अन्तर नहीं होता है।
15. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा चहरी क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
16. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति सार्थक अन्तर नही होता है ।
17. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं चहरी क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर होता है।

शोध की विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय की 120 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकी के रूप में निम्न का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. टी परीक्षण
3. टी मूल्य

शोध का परीसीमांकन –

1. प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र तक सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत चोधकार्य में जयपुर जिले के चहरी क्षेत्र के दो सरकारी एवं दो गैर सरकारी विद्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्र के दो राजकीय व दो अराजकीय विद्यालयों तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत चोध कार्य जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।
4. प्रस्तुत चोधकार्य में न्यायदर्ष के रूप में माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं को लेकर अध्ययन कार्य किया गया है।
5. प्रस्तुत चोधकार्य हेतु स्वनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण –

परिकल्पना

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के गैर–सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही होता है।

सारणी

क्र. स.	गैर–सरकारी विद्यालय	N=30	M	SD	t	स्वीकृत / अस्वीकृत
1	ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा	15	97.06	5.70	0.005	स्वीकृत
2	शहरी क्षेत्र की छात्रा	15	96.53	3.80		

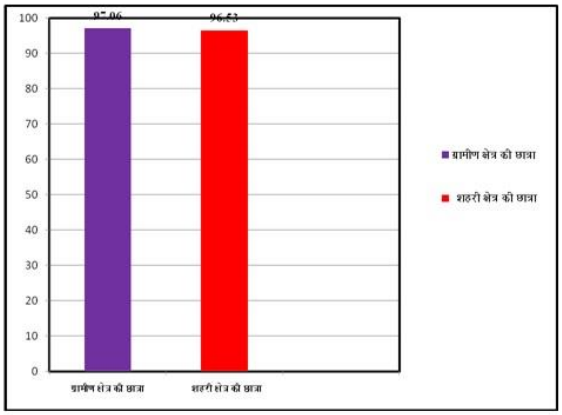

परिणामस्वरूप यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी गैर–सरकारी विद्यालयों की छात्राओं की कला शिक्षा विषय के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं की सार्थकता सिद्ध करने हेतु सांख्यिकी विधि का प्रयोग के पष्चात् प्राप्त आंकडो व निष्कर्षो का विश्लेषण किया जाता है इस प्रक्रिया में आंकडो को इस प्रकार व्यवस्थित करते है जिससे वह समस्या के सम्बंध में वांछित परिणाम को प्रस्तुत करे।

प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं की सार्थकता सिद्ध करने हेतु सांख्यिकी विधि का प्रयोग करते हुए ड का मान ैक का मान ज का मान तथा क्ि का मान निकालकर 0.01 तथा 0.05 सार्थकता विष्वास स्तर पर दिये गये मान का प्रयोग कर परिकल्पनाओं को स्वीकृत किया गया है।

सुझाव –

1. प्रस्तुत शोधकार्य जयपुर जिले तक ही सीमित रखा गया है। इस प्रकार का शोधकार्य अन्य जिलों के तुलनात्मक अध्ययन के संबंध में किया जा सकता है।
2. यह शोधकार्य केवल विद्यार्थियों को लेकर किया गया है इसमें शिक्षकों का भी अभिवृत्ति परीक्षण किया जा सकता है।
3. यह शोधकार्य केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए किया गया है। जबकि प्राथमिक स्तर पर भी कला शिक्षा विषय का होना अनिवार्य है।

4. यह शोधकार्य केवल माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित है इस प्रकार का शोधकार्य महाविद्यालय स्तर पर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. **गोस्वामी प्रेमचन्द** : भारतीय कला के विविध स्वरूप, पंचषील प्रकाशन, जयपुर।
2. **प्रसाद देवी** : शिक्षा का वाहन कला, नेषनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, 1999।
3. **गुप्ता डॉ. भयामला** : सौन्दर्य तत्वमीमांसा, सीमा साहित्य भवन, न्यू लायलपुर, दिल्ली।
4. **रामअवतार वीर** : भारतीय संगीत का इतिहास, राधा पब्लिकेशन दिल्ली।
5. **जोषी भोला दत** : संगीत शास्त्र एवं रागमाला, सरोज प्रकाशन दिल्ली।
6. **शर्मा, अनिता** : भारतीय संस्कृति का विकास, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।